MEERA

HOSPITAL

8. जब हम किसी से मिलते हैं

और उसको जय श्रीराम, या

जय श्रीकृष्ण, या जय गुरुदेव,

या जय जिनेन्द्र कहते हैं,

तब उसका अर्थ क्या है?

एक व्यक्ति किसी दूसरे से दिन में पहली बार मिलता है, तो कहता है-

जय श्री राम या

जय श्री कृष्ण या

जय गुरूदेव या

जय जिनेन्द्र या

जय माता दी या

जय बजरंग बली या

जय शिव शंकर या

जय खाटू श्यामजी या

जय सांई बाबा या अन्य कुछ और।

बिना यह जाने कि हम किसकी जय की कामना कर रहे हैं।

क्या हम भगवान श्री राम चन्द्रजी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम भगवान श्री कृष्ण जी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम अपने पूज्य गुरूदेव की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम भगवान जिनेन्द्र जी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम भगवती दुर्गाजी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम बजरंग बली हनुमानजी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम भगवान श्री शंकर जी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम खाटू श्याम जी की जय की कामना कर रहे हैं ?

क्या हम सांई बाबा की जय की कामना कर रहे हैं ?

परन्तु हमारे इन सभी भगवानों की जय तो हो चुकी है। सत युग, त्रेता युग और द्वापर युग में इन भगवानों ने अवतार लिया था। बहुत से युद्ध लड़े थे और विजय प्राप्त की थी। वह तो पुरानी बात हो गई है। वह भूतकाल हो गया है। अब कलियुग में इनको कौनसा युद्ध लड़ना बाकी है, जो आप इनकी जय-विजय की कामना कर रहे हैं?

वर्तमान में कलियुग चल रहा है। आज जीवन जीने का संघर्ष तो हमें करना पड़ रहा है। भगवान कौन सा युद्ध लड़ रहा है या लड़ने वाला है, जो भगवान की जय की कामना हम कर रहे हैं?

दूसरे, क्या हम भगवान से भी बड़े हैं, जो उनकी जय की कामना हम कर सकते हैं? क्या हम भगवान को उनकी जय होने का आशीर्वाद दे सकते हैं? तब हम किसकी जय की कामना कर रहे हैं?

क्या हम जानते हैं कि हम किसकी जय की कामना कर रहे हैं ?

जब हमसे कोई मिलता है, तब उसे देखकर हमें प्रसन्नता होती है। वह हमारा मित्र, रिश्तेदार, परिचित, पड़ोसी, मुलाकाती या अफसर हो सकता है। उस व्यक्ति को अभिवादन करने के लिए नमस्ते, नमस्कार हम करते हैं। अपने-अपने संस्कारों के अनुसार हम उसका अभिवादन करते हैं, परंतु यदि अभिवादन के साथ ही हम उसकी उन्नति के लिए, उसकी जय की कामना करते हैं, तब उसके मन में हमारे लिए प्रेम बढ़ता है। इसलिए हम अपने भगवान या ईष्टदेव से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान श्री राम, श्री कृष्ण, गुरूदेव, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हमारे सामने जो आए हैं, उन पर आप कृपा करके उनकी जय कराइए। वर्तमान में, आज इस समय जो आपके सामने उपस्थित हैं, उसी की जय होने की प्रार्थना हम कर सकते हैं।

उसी तरह से सामने वाला भी इसी प्रार्थना को दोहराता है कि हे भगवान श्री राम, श्री कृष्ण, गुरूदेव, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हमारे सामने जो आए हैं, उनपर आप कृपा करके उनकी जय कराइए। ऐसी प्रार्थना दोनों एक दूसरे के लिए करते हैं। यह मंगल कामना, आपकी जय हो, करने से दोनों में प्रेम अधिक बढ़ता है, परन्तु इतना लम्बा वाक्य बोलने की जगह हम शार्टकट में केवल दो शब्दों को ही बोलकर काम चला लेते हैं। जय श्रीराम या जय श्रीकृष्ण।

जैसे कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को जब प्यार से कहता है कि **I Love You.** अब यदि कोई प्रेमी इसकी जगह इलू **ILU** कहता है, तब उसकी प्रेमिका भी इलू **ILU** कहती है और दोनों ही समझ जाते हैं कि उन्होंने आपस में क्या कहा है और इलू **ILU** का अर्थ क्या है ?

परन्तु हम इन शब्दों का अर्थ भूल गए हैं। हमें पूरी प्रार्थना याद करना जरूरी है, तब ही हम हमारे मित्र, रिश्तेदार, परिचित, पड़ोसी, मुलाकाती या अफसर के लिए उसकी जय होने की मंगल कामना कर सकते हैं।

मुसलमान भाइयों को देखिए - वे कहते हैं- *अस्सलामालेकुम*। तब सामने वाला कहता है- *वालेकुमअस्सलाम*। अर्थात पहला-दूसरे से कहता है कि खुदा आपको सलामत रखे। तब दूसरा पहले वाले से कहता है कि खुदा आपको भी सलामत रखे। इस तरह से दोनों भाई अपने अल्लाह से, खुदा से एक दूसरे की सलामती की दुआ करते हैं। कोई नहीं कहता कि उनका खुदा सलामत रहे। वे लोग आपस में एक दूसरे के लिए खुदा से रहमत की दुआ करते हैं।

हम भी एक दूसरे की जय की प्रार्थना करते हैं, परन्तु शार्टकट के चक्कर में हम अपनी प्रार्थना का पूरा अर्थ ही भूल गए हैं।

You can
Contact me on -

93148 77066

0141-220 2220
220 2748
400 1653

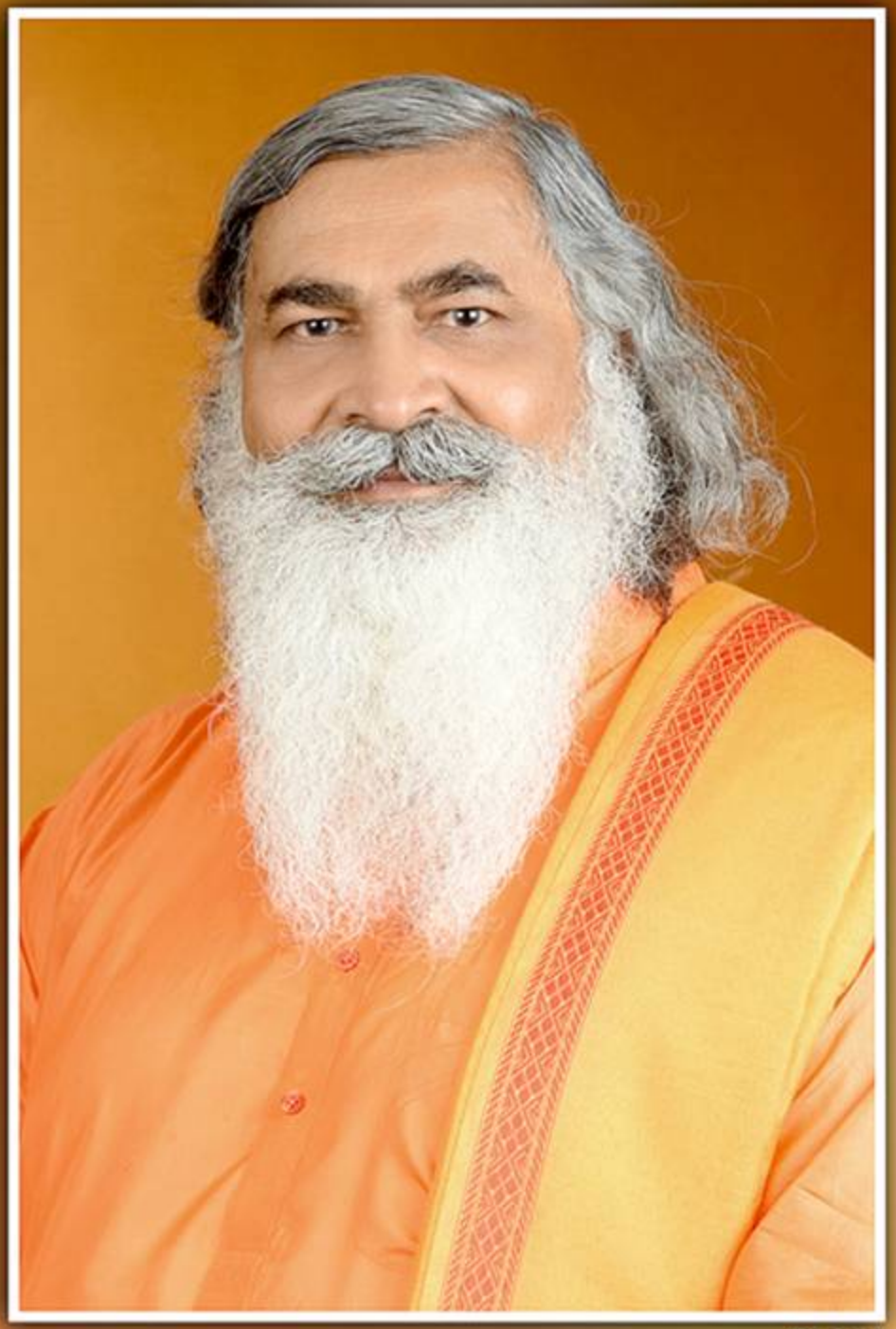

Thank You